

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या-710
उत्तर दिनांक 04/02/2026 को दिया गया

होमी भाभा कैंसर अस्पताल और रेडियोफार्मास्युटिकल उत्पादन केंद्र

710. श्री अनूप संजय धोत्रे
श्री पी. सी. मोहन
श्री दिनेशभाई मकवाणा
श्री जगदम्बिका पाल
श्रीमती डी.के. अरुणा
श्री सुकान्त कुमार पाणिग्रही

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :-

- (क) विशेष रूप से ओडिशा राज्य में होमी भाभा कैंसर अस्पतालों और रेडियोफार्मास्युटिकल उत्पादन केंद्रों सहित परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) द्वारा सहायता प्राप्त कैंसर देखभाल सुविधाओं की वर्तमान स्थिति और उपयोग का ब्यौरा क्या है;
- (ख) इलेक्ट्रॉन बीम और गामा विकिरण सुविधाओं के माध्यम से सक्षम चिकित्सा उपकरणों के स्टेरलाइजेशन, रक्त विकिरण और स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का ब्यौरा और सीमा क्या है और विशेषकर ओडिशा में इससे लाभान्वित होने वाले संस्थानों और उद्योगों का ब्यौरा क्या है;
- (ग) रेअर अर्थ, अर्धचालकों और सामरिक क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक प्रमाणित संदर्भ सामग्री, आइसोटोप संवर्धन और उच्च शुद्धता वाली सामग्री के क्षेत्र में हाल ही में हुई प्रगति का ब्यौरा क्या है और विशेष रूप से ओडिशा में प्रचालित या प्रस्तावित ऐसी सुविधाओं अथवा सहयोगों का ब्यौरा क्या है; और
- (घ) क्या ये प्रौद्योगिकियां कैंसर की वहनीय परिचर्या, बेहतर स्वास्थ्य परिचर्या, औद्योगिक आत्मनिर्भरता, आत्मनिर्भर भारत और राष्ट्रीय सुरक्षा में योगदान दे रही हैं और यदि हां, तो क्या ओडिशा राज्य सहित विशेष रूप से जनजातीय और आकांक्षी जिलों में कोई नई परियोजना या अतिरिक्त बजटीय सहायता प्रस्तावित है?

उत्तर

राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधानमंत्री कार्यालय (डॉ. जितेंद्र सिंह)

- (क) परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन टाटा स्मारक केंद्र (टीएमसी) ने मुंबई, खारघर-नवीं मुंबई, पंजाब, वाराणसी, वैज़ाग, मुजफ्फरपुर और गुवाहाटी में व्यापक कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए सात राज्यों में 11 अस्पतालों/संस्थानों की स्थापना करके अपनी सेवाओं का विस्तार किया है। टीएमसी ने दवा की खोज और सस्ती और कम दुष्प्रभाव वाली दवाओं के लिए भारतीय चिकित्सा प्रणाली का उपयोग करके खोपोली में सुविधा की स्थापना की। भारतीय और पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान को बढ़ावा, भारत में विशिष्ट औषधीय पौधों की खेती एवं संरक्षण हेतु तथा **200-विस्तरों वाला एक अत्याधुनिक कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र ओडिशा के जटनी (खुर्दा जिला) स्थित नाइसर परिसर में स्थापित किया जा रहा है। वर्तमान स्थिति और उपयोग निम्नानुसार है:**

क्र. सं.	अस्पताल का नाम	शहर, राज्य	कमीशनन की तारीख	बिस्तर	2025 में पंजीकृत रोगियों की संख्या	2025 में की गई सर्जरी की संख्या
1	टाटा स्मारक अस्पताल	मुंबई, महाराष्ट्र	1941	650	35705	43208
2	कैंसर में उपचार, अनुसंधान और शिक्षा का प्रगत केंद्र (एक्ट्रेक)	नवी मुंबई, महाराष्ट्र	2002	500	8970	12588
3	वाराणसी में महामना पं. मदन मोहन मालवीय कैंसर केंद्र (एमपीएमएमसीसी)	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	19/02/2019	394	25047	4188
4	होमी भाभा कैंसर अस्पताल	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	01/05/2018	189	2684	556
5	होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र	विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश	11/05/2023	210	9751	4581
6	होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र	न्यू चंडीगढ़, पंजाब	24/08/2022	300	10107	4807
7	होमी भाभा कैंसर अस्पताल	संगरूर, पंजाब	20/01/2015	150	7796	1963
8	डॉ. बी. बरुआ कैंसर संस्थान (बीबीसीआई)	गुवाहाटी, असम	27/11/2017	312	9810	4273
9	होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र	मुजफ्फरपुर, बिहार	30/04/2025	107	7526	1212
10	प्लेटिनम जयंती खंड	मुंबई, महाराष्ट्र	अनुमानित 31/03/2027	583	--	--
11	कैंसर में उपचार, अनुसंधान और शिक्षा का एकीकृत केंद्र (आईसीटीआईसी)	खोपोली, रायगढ़, महाराष्ट्र	अनुमानित 27/06/2026	75	--	--
12	होमी भाभा कैंसर अस्पताल	भुवनेश्वर, ओडिशा	अनुमानित 07/05/2026	200	--	--

(ख) ओडिशा में चिकित्सा उत्पादों के निर्जर्मीकरण के लिए डीईई द्वारा कोई विकिरण सुविधा स्थापित नहीं की गई है। ओडिशा में दो गामा किरणन चैम्बर यूनिट हैं

- जीसी-5000 - "राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाइसर)", भुवनेश्वर, ओडिशा में स्थापित
- रक्त किरणक - "आईएमएस और एसयूएम अस्पताल", भुवनेश्वर, ओडिशा में।

(ग) फेरोकार्बोनेटाइट (एफसी) भारत में बड़े निक्षेपों में अन्वेषण किए गए आरईई का एक सिद्ध स्रोत है। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) ने परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय (एएमडीईआर) के साथ मिलकर विश्लेषणात्मक विधियों के विकास और सत्यापन, उपकरणों के अंशांकन और गुणवत्ता नियंत्रण के लिए आवश्यक विरल मृदा तत्व (आरईई) हेतु प्रमाणित संदर्भ सामग्री (एफसी-सीआरएम) तैयार की है। यह 13 आरईई (Ce, Dy, Er, Eu, Gd, La, Nd, Pr, Sc, Sm, Tb, Y और Yb) और 6 प्रमुख तत्वों (Al, Ca, Fe, Mg, Mn और P) को प्रमाणित करता है और आरईई अयस्क खनन में अन्वेषण, निष्कर्षण और प्रक्रम

नियंत्रण में उपयोगी है। यह विश्व का चौथा और भारत का पहला सीआरएम है। बीएआरसी उच्च-शुद्धता वाले गैलियम, इंडियम और जर्मेनियम का उत्पादन कर रहा है जो अपने नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम का समर्थन करने हेतु अर्धचालकों और विकिरण संसूचकों में उपयोग के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, रेडियोफार्मास्युटिकल अनुप्रयोगों के लिए अपेक्षित गुणवत्ता वाला ल्यूटेशियम का उत्पादन आइसोटोप संवर्धन मार्ग से भी किया जाता है। इन सीआरएम और ल्यूटेशियम आधारित विकसित रेडियोफार्मास्युटिकल का उपयोग ओडिशा सहित देश भर में स्थित उद्योगों और अस्पतालों द्वारा किया जा सकता है।

- (घ) आरईई अयस्क खनन में अन्वेषण, निष्कर्षण और प्रक्रम नियंत्रण के लिए आवश्यक आरईई सीआरएम से संबंधित ये स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां, चिकित्सा अनुप्रयोगों के लिए, विशेष रूप से कैंसर देखभाल में आवश्यक गुणवत्ता के रेडियोआइसोटोप का उत्पादन, और उच्च शुद्धता वाला गैलियम, इंडियम और जर्मेनियम का उत्पादन आत्मनिर्भर भारत पहल की दिशा में संभवतः आयात पर निर्भरता को कम करेगा। ये सामग्रियां ओडिशा राज्य सहित देश में नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्यसेवा सेक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, नाभिकीय, स्वास्थ्य सेवा और औद्योगिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए विकिरण संसूचक जैसे प्रमुख प्रौद्योगिकी गहन क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में, ओडिशा के जनजातीय और लक्ष्योन्मुख जिले के लिए बीएआरसी का कोई परियोजना प्रस्ताव नहीं है।
